□□□□ □□□□□

नई दल्लिी□ राजधानी में चुनाव प्रचार थमते ही नतीजों पर अटक्लों का बाजार काफी गर्म हो गया है□ पछिले चुनाव में बसपा को मलिने वाले समर्थनों पर जीत-हार आंकी जा रही थी□ इस बार बसपा के साथ □ क और नई पार्टी आम आदमी पार्टी (आप)समेत

क्ई अन्य पार्टयिां भी अलग-अलग इलाकों में चुनाव को बहुरंगी बनाने में जोर-शोर से जुटी रहीं□ इसीलि□ चुनाव पूर्व अनुमान पछिले चुनाव की तरह आसान नहीं है□

इस बार के चुनाव में पहले, दूसरे और तीसरे नंबर पर कौन-कौन-सी पार्टयिां आ□ंगी, इस पर चुनाव प्रचार अभयिानों के दौरान सभी पार्टयिां और सर्वेक्षण □ जंसयिां अपने अलग-अलग दावे करती रही हैं□ कसिके दावे सही होंगे□ कौन जीतेगा और कौन घर बैठेगा□ यह सब कुछ पूरी तरह से आठ दसिंबर को सामने आ□ गा, लेकनि बुधवार को दल्लिी के मतदाता सभी पार्टयिों और उम्मीदवारों की तक्दीर लखि कर अपना फैसला कर देंगे□

अब तक के चुनाव में 'आप' के अलावा बाकी पार्टयिों की मौजूदगी का लाभ अक्सर दल्लिी में भाजपा को मलिता था□ लेकनि इस बार चुनाव का मंजर बदला हुआ है□ चुनाव मैदान में पहली बार उतरी आप जैसी नई पार्टी का प्रदर्शन मतदाताओं को देखने मलि रहा है□ इस बार आप भाजपा का ज्यादा नुक्सान करेगी या तीसरी मजबूत पार्टी दखिेगी, यह खुलासा आठ दसिंबर के मतगणना के बाद हो जा□ गा□ आप के लि□ तो पहला चुनाव रहा इसलि□ उसने तो पार्टी बनने के साथ ही साल भर से चुनाव अभयिान चलाया हुआ था□ भाजपा और कांग्रेस के लि□ भी यह चुनाव जीवन-मरण का प्रश्न है□

बताते है कि भाजपा के प्रधानमंत्री पद के दावेदार नरेंद्र मोदी ने प्रयास करके हर्षवर्धन का नाम मुख्यमंत्री पद के लि□ इसलि□ घोषति करवाया कि वे अब लोक्सभा चुनाव तक दल्लिी को अपना केंद्र बना सकें□ माना जा रहा है कि अगर हर्षवर्धन की घोषणा नतिनि गडकरी के प्रभारी बनते ही हो जाती या फरवरी में वजिय गोयल के बजाय उन्हें ही प्रदेश अध्यक्ष बनाया जाता तो भाजपा का ग्राफ थो□ा और ऊंचा होता□ भाजपा के हर ब□े नेता पछिले दो हफ्ते के चुनाव प्रचार अभयिानों में दल्लिी की गलयिां छानते मलि□

चुनाव प्रचार अभयिानों का आलम यह रहा कि अप्रत्याशति ढंग से बसपा प्रमुख मायावती ने भी इस बार दल्लिी में कई सभाओं को संबोधति कर दयिा□ मौजूदा वधिानसभा में उसके दो वधिायक थे□ □क कांग्रेस में चला गया, दूसरे ने टकिट न मलिने पर बगावत कर नर्दिलीय चुनाव ल□ना तय कयिा□ उसी तरह जनता दल (□की) में वधिायक शो□ब इक्बाल के जाने के बाद पार्टी के हौसले ब□ ग□□ नतीजा यह हुआ कि पार्टी नेता और बहिार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी कई रैलयिां कर दीं□ पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के जेल जाने से उनकी पार्टी इस बार चुनाव से अलग रही□ अलबत्ता रामवलिास पासवान और उनके पुत्र चरिाग पासवान, सपा नेता रामगोपाल यादव समेत वाम दलों के अनेक नेता भी चुनाव प्रचार में आ□□ चुनाव प्रचार में आरोप-प्रत्यारोप तो खूब हु□ और कई बार अप्रयि स्थति भी आई□ लेकनि गनीमत यह रही कि कसिी ने ज्यादा सीमा नहीं लांघी□

सबसे अजूबा प्रचार अभयिान तो सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी का रहा□ शुरुआती दौर में पार्टी अध्यक्ष सोनयिा गांधी की □क और राहुल गांधी की दो सभा□ं हुईं□ राहुल गांधी की दूसरी सभा कांग्रेस की गुटबाजी में पटि गई तो उसके बाद उनकी कोई सभा ही नहीं हुई□ प्रधानमंत्री की सभा भी आखरि समय में रद्द कर दी गई□ प्रदेश कांग्रेस दफ्तर, जो चुनाव अभयिान का केंद्र बनता था, वहां पूरे चुनाव में सन्नाटा फैला रहा□ हालांकि पूरे चुनाव की कमान मुख्यमंत्री शीला दीक्षति के हाथों में रही□ वे हर बार की तरह इस बार भी दल्लिी की सभी 70 वधिानसभा सीटों में से ज्यादातर पर सभा कर पाईं□ उनकी सभाओं में भी□ भी दखिी□ यह इसलि□ उल्लेखनीय है कि जसि मैदान में राहुल गांधी को सुनने के लि□ लोग नहीं जुटे, वहीं नरेंद्र मोदी की सभा में ख□ होने की जगह न थी□ प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल उसी तरह अपने लोकसभा क्षेत्र की वधिानसभा सीटों पर प्रचार करते दखिे, जसि तरह से दल्लिी के बाकी कांग्रेसी सांसद□ कुछ वधिायकों ने अपने स्तर से अगल-बगल के कुछ नेताओं को चुनाव प्रचार में जो□ा या कांग्रेस की ओर से चुनाव देखने वाले नेता चुनाव प्रचार में दखिे□

वैसे तो चुनाव आयोग की सख्ती का यह लाभ तो दखिता ही है कि दीवारें कम गंदी होती हैं या शोर-शराबा कम होता है□ इसके कई फायदे हैं तो कई नुकसान भी हैं□ □क तो चुनाव लोकतंत्र का सबसे ब□ा पर्व होता है□ इसे आजादी के बाद से तो उत्सव की तरह मनाने की परंपरा रही है□ चुनाव आयुक्त रहे टी□न शेषन ने अति होने पर तमाम दखिावों और खर्चों पर अंकुश लगाया, उनके बाद के चुनाव आयुक्तों ने और सख्ती की और मतदान का स्वरूप ही बदल गया□ □क तो अब दलों में कार्यकर्ता कम हो ग□□ हर कार्यकर्ता बनिा पैसे लि□ काम नहीं करता□ दूसरे हर काम अब पैसों से ही होते हैं□ चुनाव आयोग के हर प्रयास के बावजूद दल्लिी के चुनाव में पैसे का बोलबाला लगातार ब□ता जा रहा है□ आयोग और दल्लिी पुलसि की सख्ती के बावजूद शराब बंटती रही□ बताते हैं कि आखरिी रात यानी मंगलवार की रात कयामत की रात बन जा□गी□

□क बात और जक्रि करने लायक है कि कांग्रेस और भाजपा का खेल बगि□ने के लि□ उनके ही बागी अलग-अलग दलों से चुनाव ल□ रहे हैं□ □क कांग्रेस के नेता बता रहे थे कि पार्टी से टकिट के लि□ करीब 1600 लोगों ने आवेदन कयिा था, उनमें से जनि 70 को टकिट मलिे, उनके अलावा ज्यादातर से न तो उम्मीदवारों ने संपर्क कयिा और न ही वे कसिी के चुनाव में लगे□ कुछ लगे भी तो अलग-अलग क्षेत्रों में□ इतना ही नहीं, कई तो बगावत कर चुनाव मैदान में उतर ग□, जनिमें से 10 प्रमुख नेताओं को पार्टी से छह-छह साल के लि□ नकिाला भी गया है□ अभी ऐसे तमाम नेता हैं, जो दूसरे दल के उम्मीदवारों के साथ मलिकर अपनी पार्टी के उम्मीदवार को हराने में लगे हु□ हैं□ यह परंपरा रही है कि जसिे टकिट मलिता है, वह सबसे पहले उन लोगों के घर जाता है जो उनके अलावा टकिट के दावेदार थे□ अब पैसे के बूते ये सारी चीजें गायब हो गई हैं□ और यह सब कुछ केवल कांग्रेस में ही नहीं, भाजपा में भी हुआ है□ भाजपा के लि□ □क लाभ का वषिय था कि उनकी ओर से यह काम आर□स□स के लोगों ने कयिा□

बहरहाल चुनाव में पैसा खर्च करने में कोई भी दल पीछे नहीं रहा□ चुनाव प्रचार में आडयिो-वीडयिो और सोशल मीडयिा का भरपूर इस्तेमाल कयिा गया□ चुनाव प्रचार के लि□ अमूमन हर ब□े दल के उम्मीदवार ने नजिी कंपनयिों की सेवा□ं लीं□ ज्यादातर ने नजिी स्तर पर ही चुनाव अभयिान चलाया□ चुनाव प्रचार में घर-घर जाना प्रचार का सबसे ब□ा माध्यम बना□ नुक्कड़ सभा□ं, रोड शो या ब□ी सभा□ं भी खूब हुईं□ इसमें कांग्रेस ही पीछे रही□ इसका □क कारण ज्यादातर कांग्रेस उम्मीदवारों का खुद को 'हैवीवेट' मानना भी है□ सोमवार को कोई ब□ी सभा नहीं हुई□ लेकनि रववािर की तरह ही सोमवार सुबह भी ज्यादातर उम्मीदवार रोड शो करके मतदाताओं को अपनी याद ताजा कराने में लगे रहे□

वैसे दल्ली में सीधा चुनाव कांग्रेस और भाजपा में होता रहा है 1993 में जनता दल ने चुनाव को तिकोना बनाने की कोशिश की थी उसके बाद बसपा ही ऐसी कोशिश करती दिखी पहली बार कोई नई पार्टी 'आप' ने इस चुनाव को बहुरंगी बना दिया है, लेकिन उसकी सफलता पर अभी कई तरह के प्रश्न लगाए जा रहे हैं